प्रतिदर्श प्रश्नपत्र, 2022-23

विषय-हिंदी, कोर्स-ए (कोड-002)

Sample Paper - 5

निर्धारित समय : 3 घंटे **पूर्णांक : 80**

सामान्य निर्देश :

(1) इस प्रश्नपत्र में दो खंड हैं- खंड 'क' और ख'। खंड-क में वस्तुपरक/बहविकल्पी और खंड-ख में वस्तुनिष्ठ/वर्णनात्मक प्रश्न दिए गए हैं।

(2) प्रश्नपत्र के दोनों खंडों में प्रश्नों की संख्या 17 है और सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

(3) यथासंभव सभी प्रश्नों के उत्तर क्रमानुसार लिखिए।

(4) खंड 'क' में कुल 10 प्रश्न हैं, जिनमें उपप्रश्नों की संख्या 49 है। दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए 40 उपप्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।

(5) खंड 'ख' में कुल 7 प्रश्न हैं, सभी प्रश्नों के साथ उनके विकल्प भी दिए गए हैं। निर्देशानुसार विकल्प का ध्यान रखते हुए सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

खंड - अ (बहुविकल्पी / वस्तुपरक प्रश्न)

1. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:** **[5]**

बाल मज़दूरी हमारे देश के लिए एक अक्षम्य अपराध है। देश में आज न जाने कितने बच्चे बाल मज़दूरी कर रहे हैं, क्या उन्हें हमारी तरह जीने का अधिकार नहीं है? राजेश जोशी ने बड़े ही मार्मिक तरीके से 'बाल-श्रमिक' के ऊपर करुण रस की कविता लिखी है। उनका कहना है 'बच्चे काम पर जा रहे हैं सुबह-सुबह' अर्थात् पढ़ाई-लिखाई छोड़कर बच्चे मज़दूरी करने काम पर जा रहे हैं। क्या उनके जीवन में खेल का मैदान नहीं है? क्या उनके लिए पुस्तकालय और पाठशाला नहीं हैं? इस तरह के भाव-बोध और पीड़ा-बोध से रचित राजेश जोशी की कविता आधुनिक सभ्य समाज के ऊपर एक प्रकार का व्यंग्य भी प्रस्तुत करती है।

वैश्विक स्तर पर शांति के लिए वर्ष 2014 के नोबल पुरस्कार प्राप्तकर्ता श्री कैलाश सत्यार्थी, जो 'बचपन बचाओ आंदोलन' के सृजनकर्ता माने जाते हैं, का कहना है कि "बाल-श्रमिकों की पहचान के संबंध में सबसे बड़ी समस्या उम्र का निर्धारण करना है।" उनके जागरूकता अभियान के कारण अब बहुत सीमा तक लोग जानने लगे हैं कि 14 साल के बच्चे से काम कराना एक दंडनीय अपराध है। इसमें उम्र का निर्धारण कर पाना बेहद कठिन काम है। इसमें बच्चों का शोषण करने वाले लोग उनकी उम्र-सीमा 14 वर्ष से ऊपर दिखाकर कानूनी प्रक्रिया से बंधनमुक्त हो जाया करते हैं। यदि कठोर नियम बनाकर उचित कार्यवाही की जाए, तो बाल मज़दूरी के ऊपर बहुत सीमा तक लगाम लगाई जा सकती है।

(i) निम्नलिखित कथनों की सत्यता पर विचार कीजिए -

i. कैलाश सत्यार्थी नोबल पुरस्कार विजेता हैं।

ii. राजेश जोशी ने बालश्रम पर कविता लिख आधुनिक सभ्य समाज पर व्यंग्य किया है।

iii. 14 वर्ष से कम आयु के बच्चों से काम करवाना दंडनीय अपराध है।

iv. बच्चों से काम करवाने पर वे आत्मनिर्भर हो जाते हैं।

क) कथन i व iv सही हैं
ख) कथन ii व iv सही हैं
ग) कथन i, ii व iii सही हैं
घ) कथन i व iii सही हैं

(ii) राजेश जोशी की कविता का मूल आशय क्या है?

क) बचपन का चित्रण करना
ख) कवि धर्म का पालन करना
ग) सभी विकल्प सही हैं
घ) बच्चों के प्रति तत्कालीन समाज की संवेदनहीनता को व्यक्त करना

(iii) बाल श्रमिकों की पहचान के संबंध में सबसे बड़ी समस्या किसे माना गया है?

क) उम्र का निर्धारण करने को
ख) समाज में पढ़ाई को कम महत्त्व देने को
ग) विद्यालयों की सीमित संख्या को
घ) पढ़ाई के प्रति बच्चों की उदासीनता को

(iv) **बचपन बचाओ आंदोलन** का समाज पर क्या प्रभाव पड़ा?

क) लोग जानने लगे कि खेल भी बच्चों के लिए आवश्यक है।
ख) लोग जानने लगे कि 14 वर्ष से कम आयु के बच्चों से काम कराना एक अपराध है।
ग) लोग जान गए कि शिक्षा का क्या महत्त्व है।
घ) लोग जानने लगे कि बचपन जीवन का सर्वोत्तम समय है।

(v) कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए-
कथन (A): कठोर नियम बनाकर उचित कार्यवाही द्वारा बालश्रम पर रोक लगाई जा सकती है।
कारण (R): राजेश जोशी ने 'बच्चे काम पर जा रहे हैं' कविता के माध्यम से समाज के उन लोगों के प्रति अपना रोष प्रकट किया है जो बच्चों को काम पर जाते हुए देखकर चुप बैठे रहते हैं I

क) कथन (A) और कारण (R) दोनों ही गलत हैं।
ख) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।
ग) कथन (A) सही है किन्तु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
घ) कथन (A) गलत है किन्तु कारण (R) सही है।

2. निर्देशानुसार 'रचना के आधार पर वाक्य भेद' पर आधारित पाँच बहुविकल्पी प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए- **[4]**

(i) **<u>जैसा</u> बोओगे, <u>वैसा</u> ही काटोगे।** रेखांकित उपवाक्य का भेद है

क) सर्वनाम आश्रित उपवाक्य | ख) विशेषण आश्रित उपवाक्य

ग) संज्ञा आश्रित उपवाक्य | घ) क्रिया-विशेषण आश्रित उपवाक्य

(ii) **मुसीबत आ जाए तो भागना उचित नहीं।** रचना के आधार पर वाक्य भेद चुनिए-

क) संयुक्त | ख) आज्ञार्थक

ग) सरल | घ) मिश्र

(iii) **सर्वदयाल ने शीत से बचने के लिए हाथ जेब में डाला तो कागज का एक टुकड़ा निकल आया।** मिश्र वाक्य में बदलिए।

i. जब सर्वदयाल ने शीत से बचने के लिए हाथ जेब में डाला तो कागज का टुकड़ा निकल आया।

ii. सर्वदयाल ने शीत से बचने के लिए हाथ जेब में डाला और कागज का एक टुकड़ा निकल आया।

iii. सर्वदयाल के शीत से बचने से बचने के लिए हाथ जेब में डालने पर कागज का एक टुकड़ा निकल आया।

iv. सर्वदयाल शीत से बचना चाहते थे इसलिए उसने जेब में हाथ डाला लेकिन उनके हाथ में कागज का टुकड़ा आ गया।

क) विकल्प (iii) | ख) विकल्प (iv)

ग) विकल्प (i) | घ) विकल्प (ii)

(iv) **<u>जो साहसी होते हैं</u>, वे मुश्किलों से कभी नहीं घबराते** रेखांकित उपवाक्य का भेद है-

क) क्रिया आश्रित उपवाक्य | ख) क्रिया-विशेषण आश्रित उपवाक्य

ग) संज्ञा आश्रित उपवाक्य | घ) विशेषण आश्रित उपवाक्य

(v) **जब मजदूरों ने गड्ढा खोद लिया तब वे चले गए।** वाक्य का संयुक्त रूप है-

क) मजदूर गड्ढा खोदकर चले गए। | ख) मजदूरों ने अपना कार्य किया और चले गए।

ग) जैसे ही मजदूरों ने गड्ढा खोदा वे चले गए। | घ) मजदूरों ने गड्ढा खोदा और वे चले गए।

3. निर्देशानुसार 'वाच्य' पर आधारित पाँच बहुविकल्पी प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए- **[4]**

(i) निम्नलिखित वाक्यों में से कर्तृवाच्य वाला वाक्य छाँटिए-

i. उसने राम की वर्षों तक प्रतीक्षा की।

ii. मुझसे गिटार नहीं बजाया जाता।

iii. राधा द्वारा स्नान किया गया।

iv. रानी से पत्र लिखा नहीं जाता।

क) विकल्प (iii) ख) विकल्प (iv)

ग) विकल्प (ii) घ) विकल्प (i)

(ii) निम्नलिखित में से कर्तृवाच्य नहीं है-

i. जिस आदमी ने पहले-पहल आग का आविष्कार किया था, वही कितना बड़ा आविष्कर्ता था।
ii. जिस आदमी ने पहले-पहल आग का आविष्कार किया है, वह कितना बड़ा आविष्कर्ता है।
iii. जिस आदमी के द्वारा पहले-पहल आग का आविष्कार किया गया, वह कितना बड़ा आविष्कर्ता रहा होगा
iv. जिस आदमी ने पहले-पहल आग का आविष्कार किया होगा, वह कितना बड़ा आविष्कर्ता होगा।

क) विकल्प (iv) ख) विकल्प (i)

ग) विकल्प (iii) घ) विकल्प (ii)

(iii) अब तो चला जाए - वाक्य के लिए उचित कर्तृवाच्य होगा -

क) अब तो चला नहीं जाता। ख) अब तो चले।

ग) अब तो चलना पड़ेगा। घ) अब चलते हैं।

(iv) बस की खिड़की से न झाँकें। भाववाच्य में बदलिए।

क) बस की खिड़की से न झाँको। ख) बस की खिड़की से न झाँका जाए।

ग) बस की खिड़की से नहीं झाँक सकते। घ) बस की खिड़की से नहीं झाँकना चाहिए।

(v) **लड़का चित्र बनाता है** वाक्य किस वाच्य से संबंधित है?

क) कर्मवाच्य ख) कर्तृवाच्य

ग) भाववाच्य घ) अकर्तृवाच्य

4. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:** **[5]**

सच हम नहीं सच तुम नहीं
सच है महज संघर्ष हो।
संघर्ष से हटकर जिए तो क्या जिए हम कि तुम,
जो नत हुआ वह मृत हुआ ज्यों वृक्ष से
झरकर कुसुम जो लक्ष्य भूल सका नहीं
जो हार देख झुका नहीं।
जिसने प्रणय पाथेय माना जीत उसकी रही।
सच हम नहीं सच तुम नहीं।

ऐसा करो जिससे न प्राणों में कहीं जड़ता रहे।
जो भी जहाँ चुपचाप अपने आपसे लड़ता रहे।
जो भी परिस्थितियाँ मिलें।
काँटे चुभें, कलियाँ खिलें।
हारे नहीं इंसान, है संदेश जीवन का यही।
सच हम नहीं सच तुम नहीं।

-- जगदीश गुप्त

(i) निम्नलिखित कथनों की सत्यता पर विचार कीजिए -

i. जीवन में आने वाले संघर्ष ही सच का वास्तविक रूप है।
ii. संसार में वास्तविक सच न तो हम हैं और न तुम।
iii. भीरु मनुष्य डाली से टूटे हुए फूल के समान है।
iv. संघर्ष में मनुष्य रास्ता भटक जाता है और रुक जाता है।

क) कथन ii व iii सही हैं
ख) कथन iv सही है
ग) कथन i, iii व iv सही हैं
घ) कथन i, ii व iii सही हैं

(ii) कवि के अनुसार जीत उसी की होती है, जो

क) हर परिस्थिति को चुनौती के रूप में स्वीकार नहीं करता
ख) जो डर जाता है
ग) संघर्षों से डरकर पीछे हट जाता है
घ) समस्याओं से नहीं घबराता

(iii) **कुसुम** शब्द का पर्यायवाची इनमें से कौन-सा शब्द नहीं है?

क) पुहुप
ख) गुलाब
ग) प्रसून
घ) सुमन

(iv) **जो नत हुआ वह मृत हुआ** पंक्ति से कवि का आशय है

क) जो सतत चलता नहीं, वह मर जाता है
ख) जो गिरता है, उसका पतन होता है
ग) जो झुक गया, वही सफल हो गया
घ) जो झुक गया, वह मर गया

(v) कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए –
कथन (A): अपने हालातों का रोना रोए बिना अपने संघर्षों से लड़ते रहना चाहिए।
कथन (R): चाहे कैसी भी परिस्थिति आए, अपने आत्मविश्वास को टूटने नहीं देना चाहिए।

क) कथन (A) और कारण (R) दोनों ही गलत हैं।
ख) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही

व्याख्या है।

ग) कथन (A) सही है किन्तु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।

घ) कथन (A) गलत है किन्तु कारण (R) सही है।

अथवा

अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये: **[5]**

कवि, कुछ ऐसी तान सुनाओ जिससे उथल-पुथल मच जाए,
एक हिलोर इधर से आए एक हिलोर उधर से आए।
प्राणों के लाले पड़ जाएँ, त्राहि-त्राहि स्वर नभ में छाए,
नाश और सत्यानाशों का धुआँधार जग में छा जाए।
बरसे आग, जलद जल जाए, भस्मसात भूधर हो जाए,
पाप-पुण्य सदसद् भावों की धूल उड़े उठ दाएँ-बाएँ।
नभ का वक्षस्थल फंट जाए, तारे टूक-टूक हो जाएँ।
कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ, जिससे उथल-पुथल मच जाए।

-- बालकृष्ण शर्मा नवीन

(i) कवि देशवासियों को कैसी तान सुनाना चाहता है?

i. प्राचीन परम्पराओं को समाप्त करने की।
ii. परिवर्तन व नवनिर्माण करने की।
iii. समाज में बदलाव लाने की।
iv. मधुर व मीठी मुसकान से युक्त।

क) कथन i व iv सही हैं
ख) कथन i, iii व iv सही हैं
ग) कथन i, ii व iii सही हैं
घ) कथन ii व iv सही हैं

(ii) कवि ने किस प्रकार के उथल-पुथल की कल्पना की है?

क) क्रांति लाने वाले
ख) विद्रोह करने वाले
ग) समाज में परिवर्तन लाने वाले
घ) आंधी लाने वाले

(iii) कवि किसका आह्वान कर रहा है?

क) लोगों का
ख) स्वतंत्रता सेनानियों का
ग) देशवासियों का
घ) नवयुवकों का

(iv) काव्यांश का मूल स्वर क्या है?

क) ओजस्वी
ख) रौद्र
ग) वीरता
घ) हास्य

(v) कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए –

कथन (A): समाज में क्रांति लाकर एक बड़ा बदलाव लाया जा सकता है।
कथन (R): पुराने पाखंडों और कुविचारों का अंत कर ही एक नए और स्वच्छ समाज की नींव रखी जा सकती है।

क) कथन (A) और कारण (R) दोनों ही गलत हैं।

ख) कथन (A) सही है किन्तु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।

ग) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

घ) कथन (A) गलत है किन्तु कारण (R) सही है।

5. निर्देशानुसार 'अलंकार' पर आधारित पाँच बहुविकल्पी प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए- **[4]**

(i) **मेघमय आसमान से उतर रही है**
संध्या सुन्दरी परी सी धीरे धीरे धीरे।
पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?

क) यमक अलंकार

ख) रूपक अलंकार

ग) मानवीकरण अलंकार

घ) अनुप्रास अलंकार

(ii) जहाँ निर्जीव पदार्थों का उल्लेख सजीव प्राणियों की तरह किया जाए कौन-सा अलंकार होता है ?

क) अतिशयोक्ति

ख) मानवीकरण

ग) उत्प्रेक्षा

घ) यमक

(iii) निम्नलिखित पंक्ति में अलंकार बताइए-
मेघमय आसमान से उतर रही है संध्या सुन्दरी परी सी धीरे धीरे धीरे।

क) अनुप्रास अलंकार

ख) रूपक अलंकार

ग) यमक अलंकार

घ) मानवीकरण अलंकार

(iv) निम्नलिखित पंक्ति में अलंकार बताइए-
आए महंत बसंत।

क) उपमा अलंकार

ख) रूपक अलंकार

ग) यमक अलंकार

घ) मानवीकरण अलंकार

(v) **तारा सो तरनि धूरि धारा मैं लगत जिमि,**
थारा पर पारा पारावार यो हलत है।
पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?

क) अतिश्योक्ति अलंकार

ख) रूपक अलंकार

ग) यमक अलंकार　　　　घ) अनुप्रास अलंकार

6. निर्देशानुसार 'पद परिचय' पर आधारित पाँच बहुविकल्पी प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए- **[4]**

(i) अपने गाँव की मिट्टी छूने के लिए मैं तरस **गया**। दिए गए रेखांकित पद का परिचय है:-

क) क्रिया, अकर्मक, पुल्लिंग, एकवचन, भूतकाल।　　　　ख) क्रिया, सकर्मक, पुल्लिंग, द्विवचन, भूतकाल।

ग) क्रिया, सकर्मक, पुल्लिंग, एकवचन, भूतकाल।　　　　घ) क्रिया, अकर्मक, पुल्लिंग, द्विवचन, भूतकाल।

(ii) वह भावुक व्यक्ति है - रेखांकित पद का उचित पद परिचय होगा -

क) गुणवाचक विशेषण　　　　ख) संख्यावाचक विशेषण

ग) सार्वनामिक विशेषण　　　　घ) परिमाणवाचक विशेषण

(iii) प्रत्येक का **अपना** महत्त्व होता है। रेखांकित पद का परिचय है-

क) सर्वनाम, निजवाचक, पुल्लिंग, बहुवचन, 'होता है' क्रिया।　　　　ख) विशेषण, सार्वनामिक, पुल्लिंग, बहुवचन, 'महत्त्व' विशेष्य।

ग) विशेषण, सार्वनामिक, स्त्रीलिंग, एकवचन, 'महत्त्व' विशेष्य।　　　　घ) विशेषण, सार्वनामिक, पुल्लिंग, एकवचन, 'महत्त्व' विशेष्य।

(iv) मैं यह दुःख नहीं सह सकता। रेखांकित पद के लिए उचित परिचय होगा -

क) व्यक्तिवाचक संज्ञा　　　　ख) समूहवाचक संज्ञा

ग) द्रव्यवाचक संज्ञा　　　　घ) भाववाचक संज्ञा

(v) **खरगोश** ने फल खाया। वाक्य में रेखांकित पद का पद-परिचय बताइए।

क) व्यक्तिवाचक संज्ञा, कर्म कारक　　　　ख) जातिवाचक संज्ञा, कर्ता कारक

ग) जातिवाचक संज्ञा, कर्म कारक　　　　घ) व्यक्तिवाचक संज्ञा, कर्ता कारक

7. गद्य पाठों के आधार पर निम्नलिखित दो बहुविकल्पी प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर लिखिए- **[2]**

(i) **एक कहानी यह भी** पाठानुसार डॉक्टर साहब का क्या नाम था?

क) श्रीकृष्ण लाल　　　　ख) श्री अंबादेव

ग) श्री बनवारी लाल　　　　घ) श्री अंबालाल

(ii) नवाव खीरे नहीं खा रहा था क्योंकि-

क) वह खीरे को तुच्छ समझता था　　　　ख) खीरे को पेट के लिए ठीक नहीं

समझते थे

ग) किसी के सामने खीरा खाना अपनी बेइज्जती मानते थे

घ) वह खीरे को तुच्छ समझता था तथा किसी के सामने खीरा खाना अपनी बेइज्जती मानते थे

8. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:** **[5]**

कौसिक सुनहु मंद येहु बालकु।
कुटिलु कालबस निज कुल घालकु।।
भानु, बंस राकेस कलंकू।
निपट निरंकुसु अबुधु असंकू।।
काल, कवलु होइहि छन माहीं।
कहों पुकारि खोरि मोहि नाहीं।।
तुम्ह हटकहु जौ चहहु उबारा।
कहि प्रतापु बलु रोषु हमारा।।
लखन कहेउ मुनि सुजसु तुम्हारा।
तुम्हहि अछत को बरनै पारा।।
अपने मुहु तुम्ह आपनि करनी।
बार अनेक भाँति बहु बरनी।।
नहि संतोषु त पुनि कछु कहहू।
जनि रिस रोकि दुसह दुख सहहू।।
बीरब्रती तुम्ह धीर अछोभा।
गारी देत न पावहु सोभा।।
सूर समर करनी करहिं कहि न जनावहिं आपु।
विद्यमान रन पाइ रिपु कायर कथहिं प्रतापु।।

(i) परशुराम ने किसे इंगित करके यह कहा कि यह बालक अपने कुल का घातक बन रहा है?

क) जनक को देखकर

ख) श्रीराम को देखकर

ग) विश्वामित्र को देखकर

घ) लक्ष्मण को देखकर

(ii) प्रस्तुत पद्यांश के रचनाकार कौन हैं?

क) जायसी

ख) तुलसीदास

ग) सूरदास

घ) कबीरदास

(iii) परशुराम ने विश्वामित्र के समक्ष लक्ष्मण को किसके समान बताया?

क) चंद्रमा पर लगे कलंक के समान

ख) तपस्वी योगी के समान

ग) सरोवर के जल के समान

घ) सूर्य के तेज के समान

(iv) लक्ष्मण के अनुसार शूरवीर अपनी करनी कहाँ दिखाते हैं?

क) युद्ध में		ख) सभा में

ग) समाज में		घ) सभी विकल्प सही हैं

(v) काव्यांश के अनुसार कायर किसे कहा गया है?

i. जो शत्रु को युद्ध में उपस्थित पाकर भी अपने प्रताप की व्यर्थ बातें करे
ii. जो अपनी वीरता का बढ़ा-चढ़ा कर वर्णन करे
iii. (i) तथा (ii) दोनों
iv. जो शत्रु से न डरे

क) विकल्प (iv)		ख) विकल्प (ii)

ग) विकल्प (iii)		घ) विकल्प (i)

9. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:** **[5]**

जैसा कि कहा जा चुका है, मूर्ति संगमरमर की थी। टोपी की नोक से कोट के दूसरे बटन तक कोई दो फुट ऊँची। जिसे कहते हैं बस्ट। और सुंदर थी। नेताजी सुंदर लग रहे थे। कुछ-कुछ मासूम और कमसिन। फ़ौजी वर्दी में। मूर्ति को देखते ही 'दिल्ली चलो' और 'तुम मुझे खून दो...' वगैरह याद आने लगते थे। इस दृष्टि से यह सफ़ल और सराहनीय प्रयास था। केवल एक चीज़ की कसर थी जो देखते ही खटकती थी। नेताजी की आँखों पर चश्मा नहीं था। यानी चश्मा तो था, लेकिन संगमरमर का नहीं था।

(i) मूर्ति किस चीज से बनी थी?

क) लकड़ी		ख) ग्रेनाइट

ग) लोहा		घ) संगमरमर

(ii) टोपी की नोक से कोट के दूसरे बटन तक ऊँचाई थी-

क) 10 फीट		ख) 2 फीट

ग) 5 फीट		घ) 4 फीट

(iii) बस्ट किसे कहते हैं?

i. किसी मूर्ति के सर से सिने तक के भाग को
ii. मूर्ति के सरवाले भाग को
iii. आदमकद प्रतिभा को
iv. उपरोक्त कोई नहीं

क) विकल्प (i)		ख) विकल्प (ii)

ग) विकल्प (iv)		घ) विकल्प (iii)

(iv) मूर्ति किसकी थी?

क) नेताजी की		ख) नेहरू जी की

ग) मोदी जी की　　　　　　　　घ) शास्त्री जी की

(v) मूर्ति में क्या कमी थी?

क) मूर्ति पर चश्मा नहीं था　　　　　　ख) मूर्ति सुंदर नहीं थी

ग) सभी विकल्प सही हैं　　　　　　घ) मूर्ति के कोट में बटन नहीं था

10. पद्य पाठों के आधार पर निम्नलिखित दो बहुविकल्पी प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर लिखिए- **[2]**

(i) **उत्साह** कविता में नवजीवन वाले किसे कहा गया है?

क) वर्षा के लिए　　　　　　ख) बादल के लिए

ग) कवि के लिए　　　　　　घ) बादल और कवि के लिए

(ii) **संगतकार** कविता अनुसार तारसप्तक में गाने के कारण कवि को कैसा अनुभव होता है?

क) त्साह से भर जाता है　　　　　　ख) बहुत ख़ुशी होती है

ग) गाने की इच्छा समाप्त हो जाती है　　　　　　घ) थक जाता है

खंड - ख (वर्णनात्मक प्रश्न)

11. पद्य पाठों के आधार पर निम्नलिखित चार प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लगभग 25-30 शब्दों में लिखिए- **[6]**

(i) हरि हैं राजनीति पढ़ि आएं - में राजनीति से कृष्ण की किस नीति की ओर गोपियों ने व्यंग्य किया है और क्यों?

(ii) संगतकार की हिचकती आवाज उसकी विफलता क्यों नहीं है?

(iii) **आत्मकथ्य** काव्य में **मधुप** किसका प्रतीक है? वह किस तरह कहानी सुना रहा है?

(iv) कवि के अनुसार फसल क्या है?

12. गद्य पाठों के आधार पर निम्नलिखित चार प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लगभग 25-30 शब्दों में लिखिए- **[6]**

(i) डुमराँव और शहनाई से संबंध था-नौबतखाने में इबादत पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

(ii) संस्कृति कब असंस्कृति बन जाती है? **संस्कृति** पाठ के आधार पर लिखिए।

(iii) अपनों का विश्वासघात मनुष्य को अधिक कचोटता है-यह कहानी यह भी पाठ के आधार पर विचार दीजिए।

(iv) बालगोबिन भगत अपनी सब चीजें साहब की मानते थे, उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

13. पूरक पाठ्यपुस्तक के पाठों पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 50-60 -शब्दों में लिखिए- **[8]**

(i) **मैं क्यों लिखता हूँ?** पाठ के अनुसार लेखन में कृतिकार के स्वभाव और अनुशासन की महत्ता स्पष्ट कीजिए।

(ii) साना-साना हाथ जोड़ि ... पाठ में सिक्किम की युवती के कथन **मैं इंडियन हूँ** से स्पष्ट होता है कि अपनी जाति, धर्म-क्षेत्र और संप्रदाय से अधिक महत्त्वपूर्ण राष्ट्र है। आप किस प्रकार राष्ट्र के प्रति अपने कर्त्तव्य निभाकर देश के प्रति अपना प्रेम प्रकट कर सकते हैं? समझाइए।

(iii) आपको बच्चों का कौन-सा खेल पसन्द नहीं आया और क्यों ?

14. किसी प्रकाशक अथवा पुस्तक विक्रेता से पुस्तकें मँगाने के लिए पत्र लिखिए। **[5]**

अथवा

अपने नए विद्यालय के परिवेश और शैक्षिक-शैक्षणिक गतिविधियाँ का उल्लेख करते हुए चचेरे भाई को पत्र लिखिए।

15. किसी प्रतिष्ठित समाचार-पत्र में पत्रकार पद के लिए स्ववृत सहित आवेदन-पत्र लिखिए। **[5]**

अथवा

आपको चरित्र प्रमाण-पत्र की आवश्यकता है। चरित्र प्रमाण-पत्र प्राप्त करने के लिए अपने विद्यालय के प्रधानाचार्य abcschool@gmail.com को ईमेल लिखिए।

16. मंडी हाउस नई दिल्ली मे उभरते चित्रकारों की चित्र प्रदर्शनी के लिए दर्शकों का ध्यान आकर्षित करते हुए 25-50 शब्दो में एक विज्ञापन तैयार कीजिए | **[4]**

अथवा

अपने दादा जी के निधन पर 30-40 शब्दों में शोक संदेश लिखिए।

17. **समाचार पत्र के नियमित पठन का महत्त्व** विषय पर दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर अनुच्छेद लिखिए। **[6]**

- ज्ञान का भंडार
- पढ़ने की आदत का विकास
- जागरूकता

अथवा

प्रातःकालीन भ्रमण विषय पर दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर अनुच्छेद लिखिए।

- प्रकृति से संपर्क
- शारीरिक व्यायाम
- सेहत के लिए उपयोगी व लाभदायक

अथवा

दहेज प्रथा-एक अभिशाप विषय पर दिए गए संकेत-बिन्दुओं के आधार पर अनुच्छेद लिखिए।

- सामाजिक समस्या
- रोकथाम के उपाय

- युवकों का कर्त्तव्य

Solution

खंड - अ (बहुविकल्पी / वस्तुपरक प्रश्न)

1. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:**

बाल मज़दूरी हमारे देश के लिए एक अक्षम्य अपराध है। देश में आज न जाने कितने बच्चे बाल मज़दूरी कर रहे हैं, क्या उन्हें हमारी तरह जीने का अधिकार नहीं है? राजेश जोशी ने बड़े ही मार्मिक तरीके से 'बाल-श्रमिक' के ऊपर करुण रस की कविता लिखी है। उनका कहना है 'बच्चे काम पर जा रहे हैं सुबह-सुबह' अर्थात् पढ़ाई-लिखाई छोड़कर बच्चे मज़दूरी करने काम पर जा रहे हैं। क्या उनके जीवन में खेल का मैदान नहीं है? क्या उनके लिए पुस्तकालय और पाठशाला नहीं हैं? इस तरह के भाव-बोध और पीड़ा-बोध से रचित राजेश जोशी की कविता आधुनिक सभ्य समाज के ऊपर एक प्रकार का व्यंग्य भी प्रस्तुत करती है।
वैश्विक स्तर पर शांति के लिए वर्ष 2014 के नोबल पुरस्कार प्राप्तकर्ता श्री कैलाश सत्यार्थी, जो 'बचपन बचाओ आंदोलन' के सृजनकर्ता माने जाते हैं, का कहना है कि "बाल-श्रमिकों की पहचान के संबंध में सबसे बड़ी समस्या उम्र का निर्धारण करना है।" उनके जागरूकता अभियान के कारण अब बहुत सीमा तक लोग जानने लगे हैं कि 14 साल के बच्चे से काम कराना एक दंडनीय अपराध है। इसमें उम्र का निर्धारण कर पाना बेहद कठिन काम है। इसमें बच्चों का शोषण करने वाले लोग उनकी उम्र-सीमा 14 वर्ष से ऊपर दिखाकर कानूनी प्रक्रिया से बंधनमुक्त हो जाया करते हैं। यदि कठोर नियम बनाकर उचित कार्यवाही की जाए, तो बाल मज़दूरी के ऊपर बहुत सीमा तक लगाम लगाई जा सकती है।

(i) **(ग)** कथन i, ii व iii सही हैं
व्याख्या: कथन i, ii व iii सही हैं

(ii)**(क)** बचपन का चित्रण करना
व्याख्या: राजेश जोशी की कविता का मूल आशय बच्चों के प्रति तत्कालीन समांज की संवेदनहीनता को व्यक्त करना है। वह कैसा समाज है, जो अपने बच्चों के लिए पुस्तकालय, खेल का मैदान, पाठशाला उपलब्ध नहीं करा पा रहा है।

(iii)**(क)** उम्र का निर्धारण करने को
व्याख्या: गद्यांश में बताया गया है कि कैलाश सत्यार्थी के अनुसार बाल श्रमिकों की पहचान के संबंध में सबसे बड़ी समस्या उम्र का निर्धारण करना है।

(iv)**(ख)** लोग जानने लगे कि 14 वर्ष से कम आयु के बच्चों से काम कराना एक अपराध है।
व्याख्या: गद्यांश के आधार पर कह सकते हैं कि 'बचपन बचाओ आंदोलन' का समाज पर यह सकारात्मक प्रभाव पड़ा कि अधिकांश लोग इस तथ्य से अवंगत हो गए कि 14 वर्ष से कम आयु के बच्चों से काम कराना एक अपराध है।

(v)**(ग)** कथन (A) सही है किन्तु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
व्याख्या: कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।

2. निर्देशानुसार 'रचना के आधार पर वाक्य भेद' पर आधारित पाँच बहुविकल्पी प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(i) **(घ)** क्रिया-विशेषण आश्रित उपवाक्य
व्याख्या: क्रिया-विशेषण आश्रित उपवाक्य

(ii)**(घ)** मिश्र

व्याख्या: तो- मिश्र वाक्य का योजक चिन्ह है।

(iii)**(ग)** विकल्प (i)

व्याख्या: जब सर्वदयाल ने शीत से बचने के लिए हाथ जेब में डाला तो कागज का टुकड़ा निकल आया।

(iv)**(घ)** विशेषण आश्रित उपवाक्य

व्याख्या: विशेषण आश्रित उपवाक्य

(v)**(घ)** मजदूरों ने गड्ढा खोदा और वे चले गए।

व्याख्या: मजदूरों ने गड्ढा खोदा और वे चले गए।

3. निर्देशानुसार 'वाच्य' पर आधारित पाँच बहुविकल्पी प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(i) **(घ)** विकल्प (i)

व्याख्या: उसने राम की वर्षों तक प्रतीक्षा की।

(ii)**(क)** विकल्प (iv)

व्याख्या: जिस आदमी ने पहले-पहल आग का आविष्कार किया होगा, वह कितना बड़ा आविष्कर्ता होगा।

(iii)**(ख)** अब तो चले।

व्याख्या: उचित कर्तृवाच्य यही होगा क्योंकि यहाँ कर्ता के अनुसार ही क्रिया है।

(iv)**(ख)** बस की खिड़की से न झाँका जाए।

व्याख्या: बस की खिड़की से न झाँका जाए

(v)**(ख)** कर्तृवाच्य

व्याख्या: कर्तृवाच्य

4. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:**

सच हम नहीं सच तुम नहीं
सच है महज संघर्ष हो।
संघर्ष से हटकर जिए तो क्या जिए हम कि तुम,
जो नत हुआ वह मृत हुआ ज्यों वृक्ष से
झरकर कुसुम जो लक्ष्य भूल सका नहीं
जो हार देख झुका नहीं।
जिसने प्रणय पाथेय माना जीत उसकी रही।
सच हम नहीं सच तुम नहीं।
ऐसा करो जिससे न प्राणों में कहीं जड़ता रहे।
जो भी जहाँ चुपचाप अपने आपसे लड़ता रहे।
जो भी परिस्थितियाँ मिलें।
काँटे चुभें, कलियाँ खिलें।
हारे नहीं इंसान, है संदेश जीवन का यही।
सच हम नहीं सच तुम नहीं।
-- जगदीश गुप्त

(i) **(घ)** कथन i, ii व iii सही हैं

व्याख्या: कवि ने जीवन का सच संघर्ष को माना है। कवि कहता है कि मेरा तुम्हारा सच

वास्तव में सच नहीं है असली सच तो निरंतर संघर्ष में है।

(ii)**(घ)** समस्याओं से नहीं घबराता

व्याख्या: कवि के अनुसार जीत उसी की होती है, जो समस्याओं से नहीं घबराता है बल्कि डटकर उनका सामना करता है तथा संघर्ष करते हुए अपने लक्ष्य की ओर बढ़ता रहता है।

(iii)**(ख)** गुलाब

व्याख्या: 'कुसुम' शब्द का पर्यायवाची गुलाब नहीं है, जबकि सुमनु, प्रसून तथा पुहुप, कुसुम के पर्यायवाची हैं। गुलाब एक फूल का नाम है किंतु फूल का पर्याय नहीं है।

(iv)**(घ)** जो झुक गया, वह मर गया

व्याख्या: जो संघर्षों के कारण स्वयं को हारा हुआ मान लेता है अर्थात् उनके आगे झुक जाता है, वह मृत व्यंक्ति के समान होता है।

(v)**(ख)** कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

व्याख्या: प्रस्तुत गद्यांश के माध्यम से कवि यह संदेश देना चाहता है कि हमें विषम परिस्थितियों में हार नहीं माननी चाहिए बल्कि उनका सामना करते हुए जीवन के मार्ग में आगे बढ़ना चाहिए।

अथवा

अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:

कवि, कुछ ऐसी तान सुनाओ जिससे उथल-पुथल मच जाए,
एक हिलोर इधर से आए एक हिलोर उधर से आए।
प्राणों के लाले पड़ जाएँ, त्राहि-त्राहि स्वर नभ में छाए,
नाश और सत्यानाशों का धुआँधार जग में छा जाए।
बरसे आग, जलद जल जाए, भस्मसात भूधर हो जाए,
पाप-पुण्य सदसद् भावों की धूल उड़े उठ दाएँ-बाएँ।
नभ का वक्षस्थल फंट जाए, तारे टूक-टूक हो जाएँ।
कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ, जिससे उथल-पुथल मच जाए।
-- बालकृष्ण शर्मा नवीन

(i) **(ग)** कथन i, ii व iii सही हैं

व्याख्या: कथन i, ii व iii सही हैं

(ii)**(क)** क्रांति लाने वाले

व्याख्या: क्रांति लाने वाले

(iii)**(घ)** नवयुवकों का

व्याख्या: नवयुवकों का

(iv)**(क)** ओजस्वी

व्याख्या: ओजस्वी

(v)**(ग)** कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

व्याख्या: कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

5. निर्देशानुसार 'अलंकार' पर आधारित पाँच बहुविकल्पी प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(i) **(ग)** मानवीकरण अलंकार

व्याख्या: मानवीकरण अलंकार

(ii)**(ख)** मानवीकरण

व्याख्या: मानवीकरण अलंकार I जैसे- संध्या-सुंदरी उतर रही है।

(iii)**(घ)** मानवीकरण अलंकार

व्याख्या: मानवीकरण अलंकार

(iv)**(घ)** मानवीकरण अलंकार

व्याख्या: मानवीकरण अलंकार

(v)**(क)** अतिश्योक्ति अलंकार

व्याख्या: अतिश्योक्ति अलंकार

6. निर्देशानुसार 'पद परिचय' पर आधारित पाँच बहुविकल्पी प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(i) **(क)** क्रिया, अकर्मक, पुल्लिंग, एकवचन, भूतकाल।

व्याख्या: क्रिया, अकर्मक, पुल्लिंग, एकवचन, भूतकाल।

(ii)**(क)** गुणवाचक विशेषण

व्याख्या: यहाँ 'भावुक' होना व्यक्ति का गुण होने के कारण गुणवाचक विशेषण है।

(iii)**(घ)** विशेषण, सार्वनामिक, पुल्लिंग, एकवचन, 'महत्त्व' विशेष्य।

व्याख्या: विशेषण, सार्वनामिक, पुल्लिंग, एकवचन, 'महत्त्व' विशेष्य।

(iv)**(घ)** भाववाचक संज्ञा

व्याख्या: 'दुःख' भाव होने के कारण भाववाचक संज्ञा है।

(v)**(ख)** जातिवाचक संज्ञा, कर्ता कारक

व्याख्या: जातिवाचक संज्ञा, कर्ता कारक

7. गद्य पाठों के आधार पर निम्नलिखित दो बहुविकल्पी प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर लिखिए-

(i) **(घ)** श्री अंबालाल

व्याख्या: श्री अंबालाल

(ii)**(घ)** वह खीरे को तुच्छ समझता था तथा किसी के सामने खीरा खाना अपनी बेइज्जती मानते थे

व्याख्या: नवाब खीरे को तुच्छ पदार्थ समझते थे तथा किसी के सामने खीरा खाना अपनी बेइज्जती मानते थे इसलिए वह खीरे नहीं खा रहे थे।

8. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:**

कौसिक सुनहु मंद येहु बालकु।
कुटिलु कालबस निज कुल घालकु।।
भानु, बंस राकेस कलंकू।
निपट निरंकुसु अबुधु असंकू।।
काल, कवलु होइहि छन माहीं।
कहों पुकारि खोरि मोहि नाहीं।।
तुम्ह हटकहु जौ चहहु उबारा।
कहि प्रतापु बलु रोषु हमारा।।
लखन कहेउ मुनि सुजसु तुम्हारा।
तुम्हहि अछत को बरनै पारा।।

अपने मुहु तुम्ह आपनि करनी।
बार अनेक भाँति बहु बरनी।।
नहि संतोषु त पुनि कछु कहहू।
जनि रिस रोकि दुसह दुख सहहू।।
बीरब्रती तुम्ह धीर अछोभा।
गारी देत न पावहु सोभा।।
सूर समर करनी करहिं कहि न जनावहिं आपु।
विद्यमान रन पाइ रिपु कायर कथहिं प्रतापु।।

(i) **(घ)** लक्ष्मण को देखकर
व्याख्या: लक्ष्मण को देखकर
(ii)**(ख)** तुलसीदास
व्याख्या: तुलसीदास
(iii)**(क)** चंद्रमा पर लगे कलंक के समान
व्याख्या: चंद्रमा पर लगे कलंक के समान
(iv)**(क)** युद्ध में
व्याख्या: युद्ध में
(v)**(ग)** विकल्प (iii)
व्याख्या: विकल्प (iii)

9. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:**
जैसा कि कहा जा चुका है, मूर्ति संगमरमर की थी। टोपी की नोक से कोट के दूसरे बटन तक कोई दो फुट ऊँची। जिसे कहते हैं बस्ट। और सुंदर थी। नेताजी सुंदर लग रहे थे। कुछ-कुछ मासूम और कमसिन। फ़ौजी वर्दी में। मूर्ति को देखते ही 'दिल्ली चलो' और 'तुम मुझे खून दो...' वगैरह याद आने लगते थे। इस दृष्टि से यह सफ़ल और सराहनीय प्रयास था। केवल एक चीज़ की कसर थी जो देखते ही खटकती थी। नेताजी की आँखों पर चश्मा नहीं था। यानी चश्मा तो था, लेकिन संगमरमर का नहीं था।

(i) **(घ)** संगमरमर
व्याख्या: संगमरमर
(ii)**(ख)** 2 फीट
व्याख्या: 2 फीट
(iii)**(क)** विकल्प (i)
व्याख्या: विकल्प (i)
(iv)**(क)** नेताजी की
व्याख्या: नेताजी की
(v)**(क)** मूर्ति पर चश्मा नहीं था
व्याख्या: मूर्ति पर चश्मा नहीं था

10. पद्य पाठों के आधार पर निम्नलिखित दो बहुविकल्पी प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर लिखिए-

(i) **(घ)** बादल और कवि के लिए
व्याख्या: बादल जल के द्वारा और कवि अपनी नवीन रचनाओं के द्वारा लोगों के जीवन में

परिवर्तन लाते हैं इसलिए उपर्युक्त विकल्प सही है।

(ii)**(ग)** गाने की इच्छा समाप्त हो जाती है

व्याख्या: गाने की इच्छा समाप्त हो जाती है

खंड - ख (वर्णनात्मक प्रश्न)

11. पद्य पाठों के आधार पर निम्नलिखित चार प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लगभग 25-30 शब्दों में लिखिए-

(i) 'हरि है राजनीति पढ़ाने आए' में राजनीति से कृष्ण की अनीति की ओर गोपियों ने व्यंग्य किया है। गोपियों को लगता है कि श्रीकृष्ण ने अब राजनीति अपना ली है और इसमें पूरी तरह निपुण हो गए है। वे गोपियों के साथ छल कपट व कुटिलता का प्रयोग करने लगे हैं। कूटनीति अपनाकर उन्होंने योग का संदेश देकर उद्धव को भेजा है।

(ii)संगतकार जानबूझ कर अपनी आवाज़ को मुख्य गायक की आवाज़ से धीमा रखता है क्योंकि वह चाहता है कि श्रोतागणों के बीच मुख्य गायक के संगीत उसके गायन का सिक्का जमा रहे उसका स्वयं पृष्ठ्भूमि में रहना और मुख्य गायक को मुख्य कलाकार बने रहने देना उसकी मनुष्यता का परिचायक है विफलता का नहीं।

(iii)आत्मकथ्य काव्य' में 'मधुप' मन का प्रतीक है। कवि का मन भी भौरे के समान ही यहाँ-वहाँ उड़कर पहुँच जाता है। यह मन रूपी मधुप कवि के जीवन की भूली-बिसरी घटनाओं की याद दिला रहा है, जिससे लगता है कि वह कहानी सुना रहा है।

(iv)कवि के अनुसार फसलें पानी, मिट्टी, धूप, हवा और मानव श्रम के मेल से बनी हैं। इनमें विभिन्न नदियों के पानी की ताकत (जादू) समायी हुई है। विभिन्न प्रकार की मिट्टियों की विशिष्ट विशेषताएँ (गुण-धर्म) छिपी हुई हैं। सूरज और हवा का प्रभाव समाया है। इन सबके साथ किसानों और मजदूरों का लगनशील श्रम व सेवा भी सम्मिलित है। इन सभी तत्वों के समेकित योगदान से ही कोई फ़सल तैयार हो पाती है।

12. गद्य पाठों के आधार पर निम्नलिखित चार प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लगभग 25-30 शब्दों में लिखिए-

(i) डुमराँव गाँव की इतिहास में कोई विशेष पहचान नहीं रही है पर फिर भी वह एक विशेष स्थान के रूप में प्रसिद्द है | भारतरत्न पुरस्कार से सम्मानित प्रसिद्द शहनाई वादक बिस्मिल्ला खां का जन्म इसी स्थान पर हुआ था | शहनाई के लिए नरकट की आवश्यकता पड़ती है और यह नरकट इस गाँव में सोन नदी के किनारे विशेष रूप से पाया जाता है। इस तरह शहनाई और डुमराँव एक-दूसरे के पूरक हो गए।

(ii)संस्कृति का अर्थ केवल आविष्कार करना नहीं होता है। यह आविष्कार जब मानव कल्याण की भावना से जुड़ जाता है, तो हम उसे संस्कृति कहते हैं, किंतु जब आविष्कार करने की योग्यता का उपयोग विनाश करने के लिए किया जाता है, तब यह संस्कृति ही असंस्कृति बन जाती है। अतः यह कहना उचित होगा कि संस्कृति मानव के कल्याण के लिए होती है और उसके विकास तथा ज्ञान का मार्ग प्रशस्त करती है, जबकि असंस्कृति का रूप अकल्याणकारी होता है और वह मानवता को विनाश की ओर ले जाती है।

(iii)अपनों के द्वारा दिए गए विश्वासघात की चोट शरीर पर न लगकर सीधे हृदय पर लगती है, इस चोट को मनुष्य आजीवन नहीं भूल पाता । शत्रु से सावधान रहने की सीख तो मनुष्य को सबसे मिल जाती है पर अपनों के द्वारा विश्वासघात करने से नई संस्कृति का जन्म होता है, इससे

प्रत्येक व्यक्ति सबके प्रति सशंकित और कुंठित रहता है। वह एकाकी जीवन जीने के लिए विवश हो जाता है। ऐसी स्थिति में उसमें अविश्वास की भावना जन्म लेती है।

(iv) बालगोबिन भगत अपनी सब चीज़ साहब की मानते थे, इसका उदाहरण यह है कि उनके खेत में जो कुछ पैदा होता था, उसे सिर पर लादकर 'साहब' के दरबार में ले जाते थे। उस दरबार अर्थात् मठ में उसे भेंट स्वरूप रख लिया जाता और उन्हें जो कुछ प्रसाद रूप में मिलता था उसी में निर्वाह करते थे।

13. पूरक पाठ्यपुस्तक के पाठों पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 50-60 -शब्दों में लिखिए-

(i) लेखन में कृतिकार के स्वभाव और अनुशासन दोनों का ही महत्त्व होता है क्योंकि कुछ कृतिकार ऐसे होते हैं जो बाहरी दबाव के बिना लिख ही नहीं सकते हैं। इसी से उनकी भीतरी विवशता व्याकुलता में बदल पाती है और लिखने को विवश होते हैं।
उदाहरणार्थ: कोई व्यक्ति सवेरे के समय नींद खुल जाने पर भी तब तक बिस्तर पर अलसाया पड़ा रहता है जब तक कि घड़ी का अलार्म न बज जाए। अतः कृतिकार का स्वभावतः अनुशासित होना आवश्यक है।

(ii) देश के नागरिक के मन में अपने देश के लिए सर्वस्व अर्पण करने की भावना होती है। अतः हमारा कर्त्तव्य है कि हम अपने देश के स्वाभिमान व गरिमा की रक्षा करते हुए देश के प्रति अपना प्रेम प्रकट करें। हमारा राष्ट्र है तो हम हैं। हमें अपनी जाति, धर्म, क्षेत्र, संप्रदाय से ऊपर उठकर राष्ट्र की सुरक्षा, एकता, सुंदरता व निर्माण के लिए मिलजुलकर कार्य करना चाहिए। हमें अपने राष्ट्र की सुरक्षा के प्रति सजग रहना चाहिए। अपने देश के समस्त नियमों व कानूनों का सत्यनिष्ठा से पालन करना हमारा प्रथम कर्त्तव्य होना चाहिए। हमें अपने चारों ओर के वातावरण को साफ व स्वच्छ रखना चाहिए। हमारा कर्त्तव्य है कि हम अपने पूरे देश को स्वच्छ बनाए रखें। हम मिलकर देश के अंदर भ्रष्टाचार के विरुद्ध लड़ाई लड़ें व उसे समाप्त करें। चुनावों में अपने वोट का प्रयोग अवश्य करें। हमारे राष्ट्र का हर बच्चा, हर व्यक्ति शिक्षित होना चाहिए। हर क्षेत्र में लड़का, लड़की को समान अधिकार मिलने चाहिए। हमें अपने देश की सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान न पहुँचाकर संरक्षित रखना चाहिए। हमें व्यर्थ समय बर्बाद न कर ईमानदारी से, राष्ट्र को विकास की तरफ ले जाने वाले कार्य करने चाहिए। हमारे अन्दर राष्ट्र-प्रेम की भावना कूट-कूटकर भरी होनी चाहिए तभी हम अपने राष्ट्र के प्रति अपने कर्त्तव्य निभा पाएँगे और अपने राष्ट्र को प्रगति के पथ पर ले जाएँगे।

(iii) कई बार वे बच्चे अनजाने में ही इस प्रकार के खेल भी खेलने लगते हैं जिससे निरीह पक्षियों और पशुओं को कष्ट होता है। कई बार तो उनके खेलों के कारण तितलियों, चिड़ियों और चींटियों आदि को अपनी जान से हाथ भी धोना पड़ता है। इसी प्रकार बच्चे गली में खेलते हुए कुत्तों, गधों आदि को बहुत तंग करते हैं जिससे कई बार इन बेजुबान पशुओं को चोट भी लग जाती। एक बार भोलानाथ और उसके दोस्तों ने खेल-खेल में चूहे को निकालने के लिए उसके बिल में पानी डालना आरंभ कर दिया | जब चूहा बाहर निकलता तो वे बेहद खुश होते | इसी प्रकार पानी डालने पर एक बिल में से अचानक चूहे की जगह साँप निकल आया।
मेरे विचार से ऐसा करना किसी भी दृष्टि से उचित नहीं है क्योंकि पशु-पक्षियों को सताना , तंग करना और दुःख देना सर्वथा अनुचित है। ऐसे पशु-पक्षियों को तंग करना जो बेजुबान और निरीह होते हैं उन्हें तंग करना तर्कसंगत नहीं है |

14. प्रबंधक महोदय,
पवन बुक्स प्रा.लि.,

दरियागंज, दिल्ली।
01 मार्च, 2019
विषय- पुस्तकें मँगाने के संबंध में पत्र
महोदय,
मुझे निम्नलिखित पुस्तकों की शीघ्र आवश्यकता है। आपसे अनुरोध है कि नीचे दिए गए पते पर निम्नलिखित पुस्तकें वी.पी.पी. द्वारा शीघ्र भिजवाने की कृपा करें। पुस्तकें भेजने से पूर्व यह जरूर देख लें कि पुस्तकें कटी-फटी न हों, नवीनतम संस्करण की हों तथा उनकी छपाई उत्तम हो। पुस्तकों पर उचित कमीशन काटकर भली प्रकार पैकिंग कर भेजें। मैं पत्र के साथ एक हज़ार रुपये का ड्राफ्ट संलग्न कर रहा हूँ। मैं पुस्तकें मिलते ही शेष राशि का भुगतान कर दूँगा।

पुस्तकें	प्रकाशक/लेखन	संख्या
एनसीआरटी हिंदी IX कोर्स 'अ'	एनसीआरटी	7
एनसीआरटी हिंदी X कोर्स 'अ'	एनसीआरटी	6
एनसीआरटी गणित XI	एनसीआरटी	8
NCERT Physics XI & XII	एनसीआरटी	8
NCERT Chemistry XI & XII	एनसीआरटी	10
NCERT Biology XI	एनसीआरटी	1
NCERT Biology XII	एनसीआरटी	11
एनसीआरटी हिंदी VIII	एनसीआरटी	9

धन्यवाद।
भवदीय
जितेंद्र पुस्तक भंडार
गोविन्द नगर, पटना (बिहार)।

अथवा

शिवपुरी, नई दिल्ली
२४ मार्च २०१९
प्रिय भाई
सोनू
सस्नेह नमस्कार
आशा है आप सपरिवार कुशल से होगें। आप को तो पता ही होगा कि इस बार हाईस्कूल की परीक्षा हमने बहुत अच्छे नंबरों से उत्तीर्ण कर ली है | लेकिन कस्बे में कोई अच्छा विद्यालय न होने के कारण मैंने नए विद्यालय में प्रवेश ले लिया है। नगर का यह विद्यालय हमारे कस्बे के विद्यालय से बहुत बड़ा एवं भव्य है। बड़े-बड़े क्लास रूम स्थायी फर्नीचर एवं खेल का मैदान तथा बड़ा-सा पुस्तकालय इस कॉलेज में मुझे देखने को मिला। वास्तव में इस कॉलेज को देखकर हमें पता चला कि विद्यालय कैसा होना चाहिए। पढ़ाई का माहौल भी बहुत अच्छा है। पहले सप्ताह ही सभी कक्षाएँ निर्धारित समय पर लगने लगी हैं तथा कक्षा में विद्यार्थियों की उपस्थिति भी लगभग नब्बे प्रतिशत रहती है। प्रधानाचार्य एवं सभी अध्यापकों का रवैया सहयोग पूर्ण है। हमें परिचय पत्र एवं पुस्तकालय कार्ड भी मिला है। हम कोई सी दो पुस्तकें घर ले जा सकते हैं तथा 15 दिन के भीतर उन्हें जमा कर पुनः दो पुस्तकें पुस्तकालय से ले सकते हैं।
सभी अध्यापक अपने विषय के विद्वान हैं और हमारे पूछे गए प्रश्नों का उत्तर स्नेह पूर्वक समझाकर देते हैं। यही नहीं अपितु प्रत्येक छात्र के लिए किसी एक मैदानी खेल में भाग लेना भी अनिवार्य

है। मैने फुटबॉल की टीम में अपना नाम लिखाया है जो मुझे विशेष प्रिय हैं। खेल अध्यापक हमें बड़े प्रेम से ट्रेनिंग देकर खेल में पारंगत बना रहे हैं। विद्यालय का अनुशासन और नियमबद्धता प्रशंसनीय है। चपरासी से लेकर प्रत्येक चाहे वह विद्यार्थी हो या अध्यापक अपना कार्य रुचि एवं लगन से करते हैं। यहाँ छात्रवृत्ति प्रदान करने की भी परंपरा है। समय-समय पर कार्यशालाएँ भी छात्रों के लिए चलती रहती हैं ताकि उन्हे भविष्य में उसका लाभ मिल सके।
यदि आप चाहे तो अभी कुछ सीटें कक्षा-11 में खाली हैं | चाचा जी से अनुमति लेकर यदि आप भी आ जाएँ तो दोनों भाई एक साथ एक कमरा लेकर रह लेंगे और साथ-साथ परीक्षा की तैयारी भी हो जाएगी। चाची जी को मेरा प्रणाम और छोटी बहिन तृप्ति को स्नेह, तुम्हारे पत्र की प्रतीक्षा रहेगी।
आपका प्रिय
राहुल

15. प्रति,
संपादक
नवभारत टाइम्स
बहादुर शाह ज़फ़र मार्ग,
नई दिल्ली ११०००१,

विषय- 'पत्रकार' पद हेतु आवेदन-पत्र।
मान्यवर,
दिनांक 06 मार्च, 2020 को इस प्रतिष्ठित समाचार-पत्र में छपे विज्ञापन संख्या 007/2020 से ज्ञात हुआ कि आपके प्रकाशन समूह को कुछ पत्रकारों की आवश्यकता है। इस पद के लिए मैं भी अपना आवेदन-पत्र प्रस्तुत कर रहा हूँ। मेरा संक्षिप्त व्यक्तिगत विवरण निम्नलिखित है-
नाम - सतपाल राणा
पिता का नाम - श्री सलेकचन्द राणा
जन्मतिथि - 20 जून , 1995
पता - ए 4/120, महावीर इक्लेव, उत्तमनगर, दिल्ली।
शैक्षणिक योग्यताएँ-

दसवीं कक्षा	सी०बी०एस०ई० दिल्ली	2007	85 %
बारहवीं कक्षा	सी०बी०एस०ई० दिल्ली	2009	76 %
बी.ए.	दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली	2012	68 %
पत्रकारिता डिप्लोमा	जे.एन.यू. दिल्ली	2014	प्रथम श्रेणी

कार्यानुभव- सांध्य टाइम्स (दिल्ली से प्रकाशित) में 25 नवंबर, 2014 से अब तक।
घोषणा- मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि यदि मुझे सेवा का अवसर मिला तो पूरी निष्ठा एवं ईमानदारी से कार्य करूँगा और अपने कार्य-व्यवहार से आपको संतुष्ट रखने का पूर्ण प्रयास करूँगा।
धन्यवाद
प्रार्थी
सतपाल राणा
हस्ताक्षर ......
दिनांक 07 जुलाई , 2020
संलग्न- शैक्षणिक योग्यताओं एवं अनुभव प्रमाण-पत्र की छायांकित प्रति।

अथवा

From: renu@mycbseguide.com
To: abcschool@gmail.com
CC ...
BCC ...
विषय - चरित्र प्रमाण-पत्र प्राप्त करने के संबंध में
महोदय,
विनम्र निवेदन यह है कि मैं आपके विद्यालय की नौवीं 'अ' की छात्रा हूँ। मैंने फरवरी 2019 में एक छात्रवृत्ति परीक्षा दी थी, जिसमें मुझे सफल घोषित किया गया है। इसमें अन्य आवश्यक प्रमाण-पत्रों के साथ चरित्र प्रमाण-पत्र भी माँगा गया है। मैंने गत वर्ष अपनी कक्षा में दूसरा स्थान प्राप्त किया था। मैं गरीब परिवार से हूँ। पिता जी किसी तरह से मेरी पढ़ाई का खर्च वहन कर रहे हैं। यह छात्रवृत्ति मिलने से मेरी पढ़ाई का खर्च सुगमता से पूरा हो जाएगा।
आपसे प्रार्थना है कि मेरे भविष्य को ध्यान में रखते हुए मुझे चरित्र प्रमाण-पत्र प्रदान करने की कृपा करें। मैं आपकी आभारी रहूँगी।
रेणु यादव

16.

चित्र प्रदर्शनी

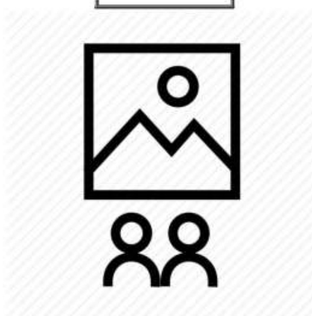

उभरते चित्रकारों द्वारा बनाए गए चित्रों की प्रदर्शनी आयोजित की जा रही है।
इच्छुक व्यक्ति प्रदर्शनी में अपने पसंदीदा चित्र आकर्षक कीमत पर खरीद भी सकते हैं।
नोट :- आपकी उपस्थिति कलाकारों की हौसला अफजाई करेगी।
स्थान- मंडी हाउस, नई दिल्ली में
दिनांक - 17 जनवरी से 19 जनवरी, 2019 तक
समय - प्रातः 9 बजे से सायं 5 बजे तक

अथवा

शोक संदेश

26 अगस्त 20xx
प्रातः 10:00 बजे
अत्यन्त दुःख के साथ सूचित करना पड़ रहा है कि मेरे दादा जी का निधन दिनांक 16/08/20xx को हो गया। ब्रह्मभोज दिनांक 28/08/20xx को होना निश्चित हुआ है। ब्रह्मभोज में उपस्थित होकर दादा जी की आत्मा को शान्ति हेतु ईश्वर से प्रार्थना करें।
शोक संतप्त
क ख ग

17. वर्तमान समय में, समाचार पत्र एक आवश्यकता बन गया है। अखबार हमें अपने देश में हो रही सभी घटनाओं के साथ ही संसार में हो रही घटनाओं से भी अवगत कराते हैं। समाचार पत्र ज्ञान के भंडार होते हैं। समाचार पत्रों से हमें नवीन ज्ञान मिलता है। नए अनुसंधान, नई खोजों की जानकारी हमें समाचार पत्रों से ही मिलती है। समाचार पत्रों से पाठक का मानसिक विकास होता

है, उनकी जिज्ञासा शांत होती है और साथ ही ज्ञान पिपासा भी बढ़ती है। समाचार पत्रों से परीक्षाओं के परिणाम, वैज्ञानिक उपलब्धियाँ, वस्तुओं के भावों के उतार-चढ़ाव, क्रीडा जगत की गतिविधियाँ, उत्कृष्ट कविताएँ, चित्र तथा महान् व्यक्तियों की जीवन गाथा, धार्मिक, सामाजिक आदि उत्सवों का परिचय प्राप्त होता है।

समाचार पत्र-पत्रिकाओं के नियमित पठन से पढ़ने की आदत विकसित होती है। यूँ तो कई प्रकार की आदतें व व्यसन होते हैं। समाचार पत्र पढ़ने की आदत से व्यक्ति में पुस्तकें पढ़ने और ज्ञान अर्जित करने की स्वस्थ आदत का विकास होता है। समाचार पत्र लोगों को उनके अधिकारों के प्रति समाज में फैली बुराइयों व अपराधों के प्रति जागरूक करते हैं, उनकी सोच में परिवर्तन लाते हैं और अन्याय व अत्याचार के विरुद्ध आवाज़ उठाने के लिए प्रेरित करते हैं। समाचार पत्र के द्वारा ही लोगों को सरकार द्वारा चलायी जा रही योजनाओं के बारे में पता लगता है। समाचार पत्र के बिना हमारा काम नहीं चल सकता। अखबार जहाँ लोगों की नौकरी व आय का स्रोत है वहीं घटनाओं के सबूत के रूप में भी काम करता है।

अथवा

प्रातःकालीन भ्रमण

प्रातःकालीन भ्रमण शरीर को स्वस्थ और निरोगी रखने की शारीरिक क्रियाओं में से एक है। प्रातःकाल के भ्रमण से मनुष्य को स्वच्छ वायु प्राप्त होती है, जिससे मनुष्य में एक नवस्फूर्ति और नवजीवन का संचार होता है। मनुष्य प्रकृति के संपर्क में आकर आनंद का अनुभव करता है। प्रकृति के मनोरम दृश्यों को देखकर उसका मन प्रफुल्लित हो उठता है। प्रातःकालीन भ्रमण करने से हमारी शारीरिक शक्ति के साथ-साथ मानसिक शक्ति का भी विकास होता है। हमारे मन से विकार दूर हो जाते हैं। प्रातःकाल मन प्रसन्न होने के कारण मनुष्य का संध्या तक का समय बड़ी प्रसन्नता से व्यतीत होता है।

सुबह की ठंडी वायु प्रत्येक प्राणी के लिए लाभदायक होती है। सभी जानते हैं कि हमारे लिए ऑक्सीजन बहुत महत्वपूर्ण है । दिन के समय तो यह मोटरगाड़ियों आदि के धुएँ से मिलकर प्रदूषित हो जाती है । दोपहर व अन्य समय में शुद्ध ऑक्सीजन का मिलना दुष्कर होता जा रहा है । अत: प्रात:काल सर्वथा उपयुक्त होता है । प्रात:कालीन भ्रमण से मनुष्य अधिक मात्रा में शुद्ध ऑक्सीजन ग्रहण करता है । इससे शरीर में उत्पन्न अनेक विकार स्वत: ही दूर हो जाते है। प्रातःकालीन भ्रमण से व्यक्ति के शरीर तथा मन मस्तिष्क में तरोताज़गी का संचार होता है। प्रातःकालीन भ्रमण व्यक्ति की सेहत के लिए भी बहुत उपयोगी एवं लाभदायक है। हमें प्रातःकाल नियमित रूप से भ्रमण करना चाहिए, जिससे हमारा मन, बुद्धि और शरीर शांत, प्रसन्न एवं दृढ़ रह सके। अतः स्वस्थ, निरोगी, प्रसन्नचित्त एवं दीर्घजीवी बनने के लिए प्रातःकाल का भ्रमण सर्वोत्तम साधन है। वर्तमान युग में तो यह एक वरदान के समान है।

अथवा

'दहेज' एक छोटा सा शब्द है किन्तु बहुत ही कष्टदायी है, क्योंकि यह एक कुप्रथा का रूप धारण कर चुका है। यह फूल के साथ जुड़ा हुआ काँटा है। कन्या के विवाह पर माता-पिता द्वारा उसे दिए जाने वाले धन को 'दहेज' कहते हैं। प्रारम्भ में दहेज कन्या के परिवार द्वारा स्वेच्छा से अपनी बेटी को दिया जाता था, किन्तु दुर्भाग्यवश आज इसका विकृत रूप ही समाज में दिखाई देता है। आज तो दहेज प्रेम से देने की वस्तु नहीं रहा बल्कि अधिकारपूर्वक लेने की वस्तु बन गया है। दहेज-प्रथा का मूल कारण यह रहा होगा कि कन्या पति के घर जाकर 'गृह लक्ष्मी' बनेगी, इसलिए उसे खाली हाथ भेजना उचित नहीं है। पर आज तो विवाह एक सौदा बनकर रह गया है, जिसमें वर पक्ष वाले अपने पुत्र की योग्यता के अनुसार कीमत तय करते हैं और मन चाहा रुपया वसूलते हैं, इसलिए दहेज की प्रथा आज भयंकर कलंक और अभिशाप बन कर रह गई है। इसीलिए तो दहेज के अभाव में सुन्दर, सुशील, गुणवती, सुशिक्षित कन्याओं का जीवन नरक बन जाता है।

इस भयंकर प्रथा के उन्मूलन के लिए लड़की और उसके माता-पिता को कानून की भी सहायता लेनी चाहिए कि दहेज न दो, न लो, भावों और अभावों को लड़के-लड़कियाँ मिलकर झेलें और तोलें।

वास्तव में दहेज जैसी लानत को जड़ से खत्म करने के लिए युवाओं को एक सशक्त भूमिका निभाने की जरूरत है। उन्हें समाज को यह संदेश देने की आवश्यकता है कि वह दहेज की लालसा नहीं रखते हैं अपितु वह ऐसा जीवन साथी चाहते हैं जो पत्नी, प्रेयसी और एक मित्र के रूप में हर कदम पर उनका साथ दे। सरकार भी विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से समाज में जागरूकता पैदा करे। क्योंकि आज के युवा वर्ग को जैसा हम दिखायेंगे, सिखायेंगे और पढ़ायेंगे वे वैसे ही गुणों के साथ ही जाकर हमारा भविष्य बनेंगे।